Date ___/___/______ Page No.: 1

Date :- 21/04/2020	Degree Part-I (Hons.)
Content Writer :-	Paper :- I
Dr. Abhay Kumar Pathak	Content of the Paper :-
Deptt. of Economics,	Micro Economics
Marwari College,	Module :-
Darbhanga (LNMU)	

TOPIC :- ANALYSIS OF OLIGOPOLY
(अल्पाधिकार का विश्लेषण)

Scanned with CamScanner

बाजार की विभिन्न स्थितियों में अल्पाधिकार ऐसी स्थिति को कहते हैं जिसमें थोड़े से विक्रेताओं के बीच प्रतियोगिता होती है। अर्थात् अल्पाधिकार उस समय उत्पन्न होता है जब थोड़े से विक्रेता बाजार में उपलब्ध होते हैं। अल्पाधिकार अथवा थोड़े से विक्रेताओं के बीच प्रतियोगिता तब होती है उद्योग के समरूप वस्तु का उत्पादन करने वाले अथवा उनके स्थानापन्न वस्तुओं का उत्पादन करने वाली फर्मों की अल्प संख्या होती है।

चूंकि अल्पाधिकार में फर्मों या विक्रेताओं की संख्या बहुत सीमित होती है इसलिए प्रत्येक फर्म के किसी निर्णय का उसके प्रतिद्वंद्वियों पर प्रभाव पड़ता ही है, साथ ही उसके प्रतिद्वंद्वियों द्वारा लिए गए निर्णय का भी इस फर्म पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। अतः अल्पाधिकार बाजार में उपलब्ध सभी विक्रेता परस्पर निर्भरता का अनुभव करते हैं, एवं तदनुरूप ही कीमत एवं उत्पादन संबंधी निर्णय लेते हैं। इसी कारण से अर्थशास्त्रियों ने इसे 'परस्पर निर्भरता का बाजार' के रूप में रेखांकित किया है। प्रो० श्रीमति जान रॉबिन्सन ने अल्पाधिकार को परिभाषित करते हुए कहा है कि "यह एकाधिकार एवं प्रतियोगिता की मध्यवर्ती स्थिति है जिसमें विक्रेताओं की संख्या एक से अधिक होती है परन्तु इतनी बड़ी नहीं कि बाजार कीमत पर किसी एक के प्रभाव को नगण्य बना दे।"

निष्कर्षस्वरूप हम कह सकते हैं कि बाजार में अल्पाधिकार की स्थिति उस समय कही जाती है जब उद्योग में समरूप वस्तु उत्पादन करने वाली अथवा निकट स्थानापन्न वस्तुओं का उत्पादन करने वाली फर्मों की संख्या अल्प अथवा बहुत थोड़ी होती है। अर्थात् एक वस्तु के दो से अधिक विक्रेता परन्तु बहुत अधिक नहीं होने पर अल्पाधिकार की स्थिति मानी जाती है।

अल्पाधिकार की विशेषताओं का वर्णन :—

बाजार में अल्पाधिकार के स्थिति का विवेचन करने हेतु इसके विशेषताओं का वर्णन आवश्यक प्रतीत होता है। इस वर्णन के आधार पर अल्पाधिकार की निम्नांकित विशेषताएँ हैं :—

(i) विक्रेताओं की अल्प संख्या का होना।
(ii) विभिन्न विक्रेताओं के बीच परस्पर निर्भरता का होना।
(iii) विभेदित वस्तुओं का उपलब्ध होना।
(iv) नई फर्मों का कठिन प्रवेश एवं बहिर्गमन।
(v) माँग वक्र के अनिश्चितता का होना।
(vi) विज्ञापन की क्रियाएँ।

अल्पाधिकार के उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर इसे निम्नांकित वर्गों में विभाजित किया जाता है :—

(1) शुद्ध तथा विभेदीकृत अल्पाधिकार :— अल्पाधिकार में जब वस्तुएँ एक ही होती है तो इसे शुद्ध अल्पाधिकार कहते हैं वहीं जब वस्तुएँ एक ही नहीं होती तो इसे विभेदीकृत अल्पाधिकार कहते हैं।

(2) बन्द तथा खुला अल्पाधिकार :— बन्द अल्पाधिकार से तात्पर्य ऐसी अवस्था से है जहाँ उद्योग पर कुछ फर्मों का नियंत्रण होता है और नए प्रतिद्वंद्वियों का प्रवेश प्रायः वर्जित रहता है। इसके विपरीत, खुला अल्पाधिकार वह अवस्था है जबकि उद्योग का द्वार नई फर्मों के प्रवेश के लिए खुला होता है।

(3) आंशिक तथा पूर्ण अल्पाधिकार :— आंशिक अल्पाधिकार के अंतर्गत उद्योगों पर एक अथवा कुछ बड़ी फर्मों का अधिकार होता है जबकि पूर्ण अल्पाधिकार में इस तरह की स्थिति नहीं होती है।

Maharaza

(५) संधियुक्त अल्पाधिकार एवं संधिविहीन अल्पाधिकार:- जब उद्योग का फर्मों के बीच कीमत, उत्पादन तथा बाजार विभाजन संबंधी समझौता हो जाता है तथा प्रत्येक फर्म इसी के अनुरूप कार्य करता है, तो इसे संधियुक्त अल्पाधिकार कहते हैं। इसके विपरीत, यदि फर्मों के बीच इस प्रकार के समझौते का अभाव रहता है तो इसे संधिविहीन अल्पाधिकार कहते हैं।

अल्पाधिकार के अंतर्गत कीमत निर्धारण :- अल्पाधिकार के अंतर्गत विभिन्न फर्मों द्वारा विभिन्न रीतियों के माध्यम से कीमत का निर्धारण किया जाता है। वे रीतियाँ निम्नांकित हैं :-

(1) स्वतंत्र कीमत निर्धारण :- स्वतंत्र कीमत निर्धारण का अर्थ है कि अल्पाधिकार उद्योग के अंतर्गत प्रत्येक फर्म अपनी कीमत तथा उत्पादन मात्रा संबंधी नीति दूसरों से स्वतंत्र रूप से निर्धारित करती है। यदि अल्पाधिकारी फर्मों द्वारा उत्पादित वस्तुओं में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है तथा उन फर्मों के मध्य बाजार विभाजन बराबर है तो स्वतंत्र कीमत निर्धारण के फलस्वरूप विभिन्न फर्मों में एक समान कीमत रखने की प्रवृत्ति पायी जाएगी। इसके विपरीत, यदि फर्मों द्वारा उत्पादित वस्तुओं में किसी प्रकार का अंतर है तो स्वतंत्र कीमत निर्धारण के अंतर्गत प्रत्येक अल्पाधिकारी फर्म की कीमत एकाधिकारी कीमत होगी। अल्पाधिकार में कीमत तथा उत्पादन का निर्धारण प्रायः कठिन हो जाती है, ऐसी स्थिति में निम्नांकित में से कोई एक संभावना बनती है :-

(a) प्रतिद्वंद्वी विक्रेताओं में निरंतर कीमत-युद्ध होने के कारण कीमत में पहले से अधिक अस्थिरता आ सकती है।

(b) कीमत किसी अनिश्चित स्तर पर स्थिर हो सकती है।

Maharazu

Date ___/___/______

(c) किसी प्रकार से कीमत का कोई संतोषजनक स्तर स्थापित हो सकता है और अल्पाधिकारी उच्च स्तर की कठोरता के साथ बनाए रख सकते हैं।

(2) गुटबन्दी के अंतर्गत कीमत निर्धारण :—
स्वतंत्र कीमत निर्धारण नीति के फलस्वरूप कीमत निर्धारण में जो अनिश्चितता का माहौल बनता है, इसके परिणामस्वरूप अल्पाधिकारी फर्मों के बीच गुटबन्दी हो जाती है। गुटबन्दी के कारण अल्पाधिकारी फर्मों द्वारा उत्पादक संघ बना दिया जाता है, जो सदस्य फर्मों के लिए कीमत निर्धारण का कार्य करता है।

(3) कीमत नेतृत्व के अंतर्गत कीमत निर्धारण :—
कीमत नेतृत्व के अंतर्गत अल्पाधिकार उद्योग की फर्में उस कीमत पर अपने वस्तुओं को बेचने के लिए तत्पर हो जाती है जो उद्योग के किसी एक सदस्य द्वारा निर्धारित की जाती है। अर्थात् कीमत नेतृत्व के अंतर्गत, एक फर्म जो साधारणतया एक बड़ी फर्म होती है, कीमत निर्धारण करती है तथा अल्पाधिकार उद्योग की अन्य सभी फर्में इसका अनुसरण करती हैं।